विश्व हेपेटाइटिस दिवस के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

माननीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह जी;

माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री तथा रसायन और उर्वरक मंत्री, डॉ मनसुख मांडविया जी;

राज्य सभा के उपसभापति माननीय श्री हरिवंश जी,

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के उपराज्यपाल श्री विनय कुमार सक्सेना जी,

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री, श्री नित्यानंद राय जी;

लोक सभा के महासचिव, श्री उत्पल कुमार सिंह जी;

आई.एल.बी.एस. के निदेशक, डॉ. एस.के सरीन जी;

देवियो और सज्जनो;

विश्व हेपेटाइटिस दिवस 2023 के अवसर पर लोक सभा के प्राइड और आई.एल.बी.एस. द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस जागरूकता सत्र में आज आकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

विशेष प्रसन्नता का विषय है कि विश्व हेपेटाइटिस दिवस पर संसद में कार्यक्रम के आयोजन की एक स्वस्थ एवं अच्छी परंपरा बनी है। पिछले कुछ वर्षों से हम संसद सदस्यों के लिए लिवर हेल्थ कैम्प और हेपेटाइटिस दिवस कार्यक्रम निरंतर आयोजित कर रहे हैं।

इस प्रकार के आयोजनों से लिवर हेल्थ के बारे में जागरूकता के प्रसार में सहायता मिलती है।

मुझे पूरा विश्वास है कि सभी माननीय सदस्यगण आई एल बी एस द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं का इस बार भी पूरा लाभ उठाएँगे।

डॉ. एस. के. सरीन जी के कुशल नेतृत्व में आई.एल.बी.एस., लिवर रोगों के प्रत्यारोपण सहित उनके निदान, प्रबंधन तथा प्रशिक्षण और शोध के लिए एक विश्वसनीय एवं उत्कृष्ट अंतर्राष्ट्रीय केंद्र बन गया है। आज इस अस्पताल में देश से ही नहीं बल्कि विदेशों से भी लोग इलाज कराने आते हैं।

हेपेटाइटिस एक साइलेंट किलर है। भारत जैसे देश में जागरूकता और जांच के अभाव में इस घातक बीमारी से प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में लोगों की मृत्यु हो जाती है। और मात्र भारत में ही नहीं है, बल्कि अनुमान है कि विश्व में लगभग 35 करोड़ लोग हेपेटाइटिस रोग से पीड़ित हैं।

लेकिन इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि यह ऐसी बीमारी है जिसे यदि समय पर पहचान लिया जाए तो जांच, उपचार द्वारा हम इस संक्रमण का पूरी तरह से उन्मूलन कर सकते हैं।

और यदि टीकाकरण हो तो इससे पूरी तरह बचना भी संभव है। और आज हमारे इस जागरूकता सत्र का उद्देश्य भी यही है कि संसद के माध्यम से पूरे देश में इस गंभीर विषय पर लोगों में जागरूकता आए।

साथियो, भारत में वायरल हेपेटाइटिस एक सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है। और इसीलिए भारत सरकार ने इसकी रोकथाम के लिए प्रभावी रणनीतियां बनाई है।

28 जुलाई, 2018 को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तत्वावधान में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय वायरल हेपेटाइटिस नियंत्रण कार्यक्रम शुरू किए जाने के बाद से इस रोग के नियंत्रण और प्रबंधन के लिए फोकस्ड दृष्टिकोण से काम किया जा रहा है। इस नियंत्रण कार्यक्रम की शुरुआत किए जाने के बाद से अब तक देश के सभी जिलों में व्यापक जांच एवम परीक्षण किए गए हैं।

लगभग 6.19 करोड़ व्यक्तियों की जांच की गई है और लगभग 2.21 लाख व्यक्ति उपचार के बाद बिल्कुल ठीक हो गए हैं। यह भविष्य के लिए एक अच्छा संकेत है।

साथियों, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डबल्यूएचओ) ने इस वर्ष का थीम *"एक जीवन, एक लिवर"* रखा है। हमारे शरीर में लिवर का क्या महत्व है, यह इस बात से पता चलता है कि यह

अंग शरीर के अंदर प्रतिदिन 500 से अधिक वाइटल फंक्शंस के द्वारा हमें स्वस्थ रखता है। लिवर पर खतरे का अर्थ है हमारे शरीर पर खतरा होना। इसलिए यह थीम अत्यंत सामयिक और उपयुक्त है।

हमने देखा है कि किस प्रकार पिछले एक दशक में पब्लिक हेल्थ केयर नीतियों में व्यापक बदलाव आए हैं। हेल्थ सेक्टर में पहले भी काम हुए हैं लेकिन पहली बार भारत में स्वास्थ्य को लेकर एक इंटीग्रेटेड अप्रोच आया है, एक लांग टर्म विज़न के साथ काम किया जा रहा है।

आज भारत में इलाज को अफोर्डेबल बनाया जा रहा है। जनता को केंद्र में रखते हुए आयुष्मान भारत जैसी योजनाएं बनाई गई हैं।

स्वास्थ्य सुविधा को सुलभ और सस्ता बनाने में टेक्नॉलॉजी का अधिकतम उपयोग किया जा रहा है। डिजिटल हेल्थ आईडी के माध्यम से देशवासियों को टाइमली हेल्थ केयर की सुविधा दी जा रही है। ई-संजीवनी जैसे टेलिकंसल्टेशन के प्रयासों से घर बैठे ही लोग डॉक्टरों से ऑनलाइन कंसल्टेशन का लाभ ले रहे हैं। अब 5G टेक्नॉलॉजी की वजह से इस सेक्टर में स्टार्ट अप्स के लिए भी बहुत संभावनाएं बन रही हैं।

ड्रोन टेक्नॉलॉजी की वजह से दवाओं की डिलिवरी और टेस्टिंग से जुड़े लॉजिस्टिक्स में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आ रहा है। देशभर के अस्पतालों, हेल्थ प्रोफेशनल्स को, एक प्लेटफॉर्म पर लाया जा रहा है। इससे अस्पतालों में इलाज की सुविधा बढ़ेगी, सही डॉक्टर तक पहुंचना सरल होगा। टेक्नॉलजी ने यह संभव बना दिया है कि दूर दराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को भी आधुनिक स्वास्थ्य सुविधा का लाभ मिले।

यही दृष्टिकोण हमें हेपेटाइटिस के मामले में भी अपनाना होगा। सोशल मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अधिकतम उपयोग से हेपेटाइटिस के संबंध में जागरूकता पैदा करते हुए इस बीमारी से लड़ना होगा। इसे एक जन अभियान बनाना होगा।

भारत के हेल्थ केयर सिस्टम में परिवर्तन का सबसे बड़ा आधार है- सबका प्रयास। कोरोना के संकटकाल में हमने सबका प्रयास की ताकत देखी है।

दुनिया के सबसे बड़े, सबसे तेज़, सबसे प्रभावी कोविड टीकाकरण अभियान की प्रशंसा आज दुनिया कर रही है।

हमने मेड इन इंडिया वैक्सीन बनाई, उन्हें बहुत कम समय के भीतर, दूर-दूर तक पहुंचाया। इसमें आशा वर्कर, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, प्राइमरी हेल्थकेयर वर्कर से लेकर फार्मास्यूटिकल सेक्टर तक के हर साथी ने शानदार काम किया है।

हेल्थ केयर के हमारे फर्स्ट रेस्पॉन्डर्स की इस ताकत को हमें हेपेटाइटिस रोगों के लिए जागरूकता और निवारण में उपयोग करना होगा।

हेपेटाइटिस के विरुद्ध इस युद्ध में विजय के लिए स्वास्थ्य सेवा से जुड़े अधिकारियों, नीति-निर्माताओं और चिकित्सकों को समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता है।

यहाँ पर हमारे जनप्रतिनिधि बैठे हैं। आप सभी अपने मतदाताओं से जुड़े हैं। इसलिए आप सभी माननीय संसद सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि वे लिवर हेल्थ के विषय में अपने अपने संसदीय क्षेत्रों में जागरूकता फैलाएं।

वे अपने मतदाताओं को बताएं कि टीकाकरण के द्वारा इस गंभीर बीमारी को रोका जा सकता है, नियमित जांच से इसका समय रहते पता लगाया जा सकता है।

मुझे विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हम वर्ष 2030 तक इसे समाप्त करने के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। मैं आई.एल.बी.एस. को पुनः शुभकामनाएं देता हूँ और उनके भावी प्रयासों में सफलता की कामना करता हूँ।